

(1)
शारदा वन्दन

मेरा हंस बनें तब वाहन,
ऐसी कृपा करो।
ज्ञान मिहिर कर उदित गगन में,
सद्यः तिमिर हरो॥
शारदे ऐसी कृपा करो॥ 1 ॥

पुस्तक तक न रहे परिसीमित,
मन में ज्ञान भरो ।
वरद हस्त निज मम नत शिर पर,
ममता युक्त धरो॥
शारदे ऐसी कृपा करो॥ 2 ॥

नीर क्षीर सुविवेक जगे शुभ,
फिर से हंस करो।
षड्रिपु को कर पूर्ण पराजित,
तृष्णा दंश हरो ॥
शारदे ऐसी कृपा करो॥ 3 ॥

विकसित कर वह शुभ्र सहस्रदल,
सुरभित प्राण करो।
गुंजित हो उर मध्य आदि स्वर,
तन्त्री मुखर करो ॥ 4 ॥
शारदे ऐसी कृपा करो।
-शिव कुमार मिश्र-